IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"शब्द तरंग-जीवन की शाश्वत और यथार्थ अभिव्यक्ति"

DR. NILAM AMBALAL SEN

ASSISTANT PROFESSOR

Government Arts And Commerce College Bhilad

Bhilad Dist. Valsad, Gujarat, India

पूर्वभूमिका :

पाश्चात्य साहित्य के संपर्क और संसर्ग के फल स्वरुप ही हमारे यहां उपन्यास, कहानी, निबंध जैसे साहित्य प्रकारों में नई विभावना देखने को मिलती है। उसी प्रकार संक्षिप्त काव्य स्वरूप की बात करें तो प्राचीन काल से ही कवियों का आकर्षण इस ओर रहा है और उसका सुंदर उदाहरण मुक्तक के प्रयोग में देखा जा सकता है। हाइकु आधुनिक युग में विकसित होने वाली काव्य विधा है। जो मूल रुप से जापानी कविता की देन है। हाइकु की रचना सरल, संक्षिप्त और ध्वन्यात्मक होती है। कवि अपने स्व से इसमें से मुक्त रहता है। हाइकु 3 पंक्तियों का संक्षिप्त काव्य है। जिसमें पहली पंक्ति में 5 अक्षर दूसरी पंक्ति में 7 अक्षर और तीसरी पंक्ति में पांच अक्षर मिलकर कुल 17 अक्षरों की कविता हाइकु कहलाती है। विश्व की अनेक भाषाओं में हाइकु लिखे जाते हैं। कम शब्दों में अधिक कहना है हाइकुकार की खूबी कहीं जा सकती है। जिसे गागर में सागर भरना कह सकते हैं।

बात करें गुजरात के हिंदी काव्य की तो गुजरात जैसे अहिंदी भाषी राज्य में हिंदी काव्य के विकास में बहुत सारी संभावनाएं देखी जा रही है। अनेक कवि अपनी कविताओं के द्वारा हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने का सफल प्रयास कर रहे हैं। गुजरात के ऐसे ही चर्चित और बहु प्रसिद्ध कवि डॉ.वणकर जी है । जिन्होंने काव्य समीक्षाएं, लघुकथाएं, आदिवासी और दलित साहित्य संबंधी अपनी रचनाएं हिन्दी साहित्य को प्रदान की है। आप की 16 कृतियां प्रकाशित हो चुकी है। उनमें दो हाइकु संग्रह है। प्रथम हाइकु संग्रह "तिल का ताड़" जिसमें 350 हाइकु संग्रहित है। और दूसरा हाइकु संग्रह "शब्द तरंग" है। जिसमें 300 हाइकु संग्रहित है।

"शब्द तरंग" हाइकु संग्रह का प्रथम संस्करण 2021 में प्रकाशित हुआ था। जीवन के विभिन्न रंगों की अभिव्यक्ति इस संग्रह में देखी जा सकती है। इस संग्रह में उत्सव-पर्व, ऋतु-वर्णन, श्रमिक-किसान, दहेज-नारी, वसंतऋतु, कोरोना वायरस, देश-प्रेम, प्रदूषण, जाती-पाती गत भेदभाव, प्रेम, जीवन विषयक, नूतन वर्ष संबंधी हाइकु है। कम शब्दों में बहुत कुछ कहना बड़ा मुश्किल होता है। यह सिद्धि डॉ. धीरज वणकर जी को प्राप्त है। डॉ.धीरज जी अपनी अनुभूति के धरातल पर कल्पना के रंगों से रंग कर शब्दों के द्वारा एक ऐसा भाव जगत तैयार करते हैं जो यथार्थ से भरपूर लगता है। शब्द की ताकत को पहचान कर कभी उससे हथियार की तरह इस्तेमाल कर समाज में सोए हुए लोगों को जगाने का प्रयास करते हैं।

डॉ.धीरज वणकर जी भारतीय समाज में पले-बडे हुए होने से अपने आस-पास के परिवेश को बखूबी जानते हैं। तथा समाज में व्याप्त ज्वलंत समस्याएं, रूढियों, शोषण, नारी समस्याएं, महामारी, प्रकृति आदि अनेक विषयों पर अपनी कलम चलाते हुए नजर आते हैं। "शब्द तरंग" हायकू काव्य संग्रह में जीवन जगत के लगभग प्रत्येक पक्ष का अनुभव विद्यमान है। हम कह सकते हैं कि "शब्द तरंग" उस आकाश में मेघ धनुष की भाती चमकता हुआ नजर आता है। जिसमें जीवन के सभी रंग मौजूद है। इस संग्रह में कवि की अपने जीवन अनुभूति को कम से कम शब्दों में बहुत कुछ कहने की जो कला है वह स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। कवि का जीवन अनुभव बहुत ही व्याप्त है। प्रत्येक हाइकु में जीवन की कुछ ना कुछ तरंगे रस पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति की है।

"शब्द तरंग" में जीवन के विविध शाश्वत और यथार्थ :

जाती-पांती विषयक :

"सदियां बीती
समाज भी बिखरा
न जातिवाद"[1]

प्राचीन काल से ही जातिगत भेदभाव चले आ रहे हैं। अनेक लोगों के अथक प्रयास के बावजूद भी समाज में ऊंच-नीच के भेदभाव समाप्त नहीं हुए। आधुनिक समय में भी जाति विषयक भेदभाव देखने को मिलते हैं। कवि ने अपने ही हाइकु में जातीगत भेदभाव की संवेदना प्रस्तुत की है। समाज के निम्न वर्ग के प्रति कवि की संवेदना प्रस्तुत हुई है। समाज को जाती-पाती के बंधन से मुक्त कराने की तड़प कवि में दिखाई देती है।

"दम तोड़ती
सुरक्षा बिन आज
दलित बस्ती"[2]

समाज के पिछड़े शोषित हुए वर्गों की संवेदना को प्रस्तुत हाइकु में वाचा प्रदान की है। जिसमें दलितों को सुविधा के अभाव में घुट-घुट कर या मर-मर कर जीने का एवं अपनी इच्छाओं को मार देने का वर्णन देखने को मिलता है।

"जाती घमंड
इंसान इंसान को
निगल रहा"[3]

उच्च वर्ग सदैव से ही शासक वर्ग रहा है। उच्च कही जाने वाली जातियों ने अपना आधिपत्य हर जगह जमाए रखा है। कहने को तो वे उच्च वर्ग है परंतु जब उच्च वर्ग मानव मूल्यों की बात आती है तब वह अपने अहंकार से ग्रस्त निम्न जातियों का शोषण करते नहीं अटकते।

"फेंक दो झाड़ू
पकड़ लो कलम
भीम के बंदे"[4]

कवि शोषित वर्गों के लोगों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करते हैं। शिक्षा के द्वारा मनुष्य अपने आप को बदल सकता है। समाज में क्रांति ला सकता है। इसीलिए कवि दलित लोगों को झाड़ू छोड़कर कलम की राह अर्थात शिक्षा की राह दिखलाते है। शिक्षा के मार्ग पर चलकर मनुष्य अपना तथा अपने समाज का विकास कर सकता है। कवि ने बाबा साहब के विचरों मूर्तिमत किया है।

"भेद मिटाए
आओ ऊंच-नीच का
देश बचाए"[5]

उपर्युक्त हाइकों में नव उत्साह, नवोन्मेष पर कर कवि समाज के उच्च नीच के भेदभाव मिटाकर देश को जगाने की बात कर रहे हैं।

नारी विषयक :

"सम्मान करें
शक्ति स्वरूपा नारी का
घर बाहर"[6]

संस्कृत साहित्य में भी कहा गया है की जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवता भी निवास करते हैं। इसी विचारधारा को कवि ने अपने कलात्मक रूप से इस हाईकु में प्रस्तुत किया है। नारी का एक स्वरूप बेटी भी है। उस बेटी की उपेक्षा कर रहे समाज पर व्यंग्य किया है कि

"समझा जाता
पराया धन बेटी
उपेक्षा करें"[7]

नारी का जीवन भले ही संघर्षमय रहा हो परंतु वह अपने कर्म और कर्तव्य के बल पर हर क्षेत्र में सफल रही। कवि कहते –

"कर्म के बल
धरा से व्यमि तक
नारी है छाई"[8]

त्योहार विषयक :

कवि ने जीवन के विभिन्न त्योहारों की आशापूर्णा अभिव्यक्ति की है । हमारे जीवन में त्योहारों का महत्वपूर्ण स्थान है। मानव त्योहारों को खुशी-खुशी मनाते है। कवि ने भी त्योहारों की सुदंर अभिव्यक्ति की है ।

"नूतन वर्ष
खुशहाली ले आया
शुभ हो वर्ष"[9]

कवि नए वर्ष में नई उमंग के साथ आशावाद की अभिव्यक्ति किया है। -

"नूतन वर्ष
उमंग-उल्लास हो
सकल विश्व"[10]
"नूतन वर्ष
ईश्वर से वंदना
सुख-शांति दे"[11]

कवि नए वर्ष में लोगों के लिए उमंग, उल्लास, खुशी, सुख और शांति की ईश्वर से प्रार्थना करते है।

प्रकृति विषयक :

"चीं चीं चीं कर
सुबह जगा देती
प्यारी गौरैया"[12]

प्रकृति में सम्मिलित और हमारे दैनिक जीवन में दिखाई देने वाली गौरैया जो किसी समय पत्रक या अलार्म के बिना सूर्योदय के साथ स्वयं जग जाती हैं। एवं संसार को अपनी मधुर आवाज से आगाह भी करती हैं कि भौर हो चुका है। कवि की सुंदर अभिव्यक्ति दृष्टिगत होती है

"रोज निकले
नया सूरज एक
उजाले बांटें"[13]

उपर्युक्त हाइकु में कवि सूरज को उजाला बांटने वाला कहकर रोज नहीं आशा, नये विश्वास, नये उत्साह, नया उन्मेष, नया सपना दिखाने वाला या बांटने वाला कहते हैं। कवि कहते है कि प्रत्येक दिन अपने आप में नया होता है और हर दिन हमें अपना कुछ नया करने का प्रयास करना चाहिए की ओर संकेत करते हैं।

"महिमा भारी
पावन सावन की
घंटों की गूंज"[14]

सावन के महीने में जब प्रकृति अपने हर्ष उल्लास का पर्व मनाते नजर आती है। ऐसे में कवि सावन के महत्व को बताते हुए कहते हैं कि सावन का महिमा आध्यात्मिक दृष्टि से पावन माना गया है। हिंदू धर्म में इस माह का विशेष महत्व है। सावन से ही त्योहारों की शुरुआत होती है। सावन में मंदिरों में घंटनाद सुनकर पूरी प्रकृति जैसे सावन की बधाइयां देती नजर आती है।

"जाडो की रानी
धूप है अनुपम
सूर्य की लाडो"[15]

प्रस्तुत हाइकु में धूप के सौंदर्य को कवि ने वर्णित किया है। धूप को ठंडी की रानी कहकर उसे उच्च पद पर आसीन कर दिया है साथ में उसे सूर्य की प्यारी लाडली कहकर अपना प्रेम भी प्रदर्शित किया है।

"शीतलहर
ढक गए पर्वत
हिम से सारे"[16]

उपर्युक्त हाइकु में ठंड के प्रकोप को प्रदर्शित किया गया है। जिसमें प्रकृति के उद्दीपन रूप को देखा जा सकता है। ठंड का प्रकोप इतना है कि बर्फ ने पर्वतों पर अपनी चादर सी बिछा दी है। ऐसा लगता है कि पर्वत ना होकर कोई हिमखंड हो।

"खेत से नाता
माटी से तन सना
अन्नप्रदाता"[17]

प्रस्तुत हाइकु में धीरज जी ने भारत के कृषि और किसान की बात कही है। जो प्रकृति से सिधे जुड़ी हुई है। किसान का उसके खेत से अटूट नाता होता है। प्रकृति से सीधा जुड़ा होने के कारण प्रकृति के आरोह अवरोह किसान

के जीवन पर सीधे असर करते हैं। मिट्टी में सनकर धूप में तनकर किसान जीवन जीने के लिए अनिवार्य ऐसे अन्न को उगाने का कार्य करता है सच में हमारा अन्नदाता है।

इस तरह शब्द तरंग में अभी नहीं प्रकृति के विभिन्न रंग और रूप को सुंदर अभिव्यक्ति की है।

प्रेम विषयक :

कवि ने शब्द तरंग में प्रेम के विविध रंग के चित्र अंकित किये है। प्रेम को विविध रूपों में संवेदना के साथ प्रस्तुत किए है। मां, पिता, बेटी, पत्नी और प्रियतमा के प्रेम की सुंदर अभिव्यक्ति की है।

"पावन धार
आंखों में अंसुमन
मां दुलार है"[18]

कवि मां की महिमा, प्रेम, स्नेह की सुदंर अभिव्यक्त करते है ।

"ईश्क का दर्द
पीर है पर्वत सी
जलती आग"[19]

कवि हाइकु में श्रृंगार रस के वियोग पक्ष की अभिव्यक्ति करते है। प्रेम का दर्द, पीडा, विरह, को बहुत ही कम शब्दों मे अभिव्यक्त कर देते है।

कोरोना विषयक :

कवि ने सांप्रत समय में फैली हुई विश्व महामारी कोरोना के विषय में भी अपने विचार हाइकु के माध्यम से प्रस्तुत किए हैं।

"क्रूर कोरोना
प्रकृति है उनकी
हमसे खेलें"[20]

कवि कोरोना जैसी महामारी को क्रूर कहता है। कवि की यह अनुभूति रही यथार्थ है। किस तरह कोरोना जैसी महामारी ने पूरे विश्व में अपना आंतक फैलाया है। मानव जाति इस कोरोना की महामारी से खतरे में पड़ गई है । उस कोरोना की प्रकृति ऐसी है कि मानव जाति के साथ जैसे कोई खेल खेल रही है।

"गम का साया
लाया है ओमीक्रॉन
मुश्किलें फिर"[21]

नए वर्ष 2022 के प्रारंभ होते ही फिर से ओमीक्रॉन जैसे वायरस ने समग्र विश्व में हाहाकार मचाया। फिर से मानव जाति घर में बंद होने को मजबूर हो गई। फिर से लोगों की मुश्किलें बढ़ती गई। जैसे सभी और गम का साया फैला है। कवि ने अपने विचार यथार्थ रूप से प्रस्तुत किए हैं।

"बच्चे बचाए
गांव-नगर देश
वैक्सीनेशन"[22]

कोरोना जैसी महामारी से बचने का एक ही रास्ता वैक्सीनेशन है। कवि वैक्सीनेशन के प्रचार और प्रसार के लिए हाइकु में अपने विचार इस तरह से प्रस्तुत किये है।

निष्कर्ष :

"शब्द तरंग" में जीवन विविध रस, रंग और कला का त्रिवेणी संगम हमें देखने को मिलता है। "शब्द तरंग" हाइकु संग्रह की संवेदना अपने विराट तत्वों में लौकिक एवं पारलौकिक ध्रुव को स्पर्श करती है। कवि की अनुभूति से उपजे संवेदना मानव जीवन को अर्थवान प्रदान करती है। कवि ने मानवीय जीवन के विविध रूप एवं रंगों के साथ जुड़े हुए सारे तत्वों का संवेदना पूर्ण भावाभिव्यक्ति वर्णित की है। मानव जीवन से जुड़े विविध आयाम जैसे- प्रकृति, राष्ट्रप्रेम, धर्म, मूल्य, मानवीय प्रेम, ईश्वरीय प्रेम, भक्ति, नैतिकता, सामाजिक समस्याएं आदि को गरिमा मई रूप से स्थापित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :

1. **शब्द तरंग- डॉ.धीरज भाई वणकर, ज्ञान प्रकाशन, कानुपुर, वर्ष-2022, पृष्ठ-51**
2. **वही, पृष्ठ-**35
3. **वही, पृष्ठ-52**
4. **वही, पृष्ठ-54**
5. **वही, पृष्ठ-91**
6. **वही, पृष्ठ-74**
7. **वही, पृष्ठ-62**
8. **वही, पृष्ठ-46**
9. **वही, पृष्ठ-102**
10. **वही, पृष्ठ-88**
11. **वही, पृष्ठ-88**
12. **वही, पृष्ठ-89**
13. **वही, पृष्ठ-92**
14. **वही, पृष्ठ-98**
15. **वही, पृष्ठ-**97
16. **वही, पृष्ठ-27**
17. **वही, पृष्ठ-**28
18. **वही, पृष्ठ-36**
19. **वही, पृष्ठ-104**
20. **वही, पृष्ठ-**94
21. **वही, पृष्ठ-95**
22. **वही, पृष्ठ-95**